श्रीरामानन्ददर्शनशोधसंस्थानग्रन्थमाला का ६८ वां पुष्प

卐 सर्वेश्वरश्रीसीतारामाभ्यां नमः 卐

श्रीहनुमते नमः

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनमः

श्रीमन्मूलरामायणम्

लघुदीपिकायुतम्

श्रीसीतारामप्रपत्तिः

संसारसागरान्नाथौ पुत्रमित्रग्रहाकुलात् ।
गोप्तारौ मे दयासिन्धू प्रपन्नभयभञ्जनौ ॥१॥
योऽहं ममास्ति यत्किञ्चिदिह लोके परत्र च ।
तत् सर्वं भवतो रेव चरणेषु समर्पितम् ॥२॥
अहमस्म्यपराधानामालयस्त्यक्तसाधनः ।
अगतिश्च ततो नाथौ भवन्तावेव मे गती ॥३॥
तवास्मि जानकीकान्त ? कर्मणा मनसा गिरा ।
रामकान्ते ? तवैवास्मि यूवामेवगती मम ॥४॥
शरणं वां प्रपन्नोऽस्मि करुणानिकराकरौ ।
प्रसादं कुरुतां दासे मयि दुष्टेऽपराधिनि ॥५॥
मत्समो नास्ति पापात्मा त्वत्समो नास्ति पापहा ।
इतिसञ्चिन्त्य देवेश ? यथेच्छसि तथा कुरु ॥६॥
अन्यथा हि गतिर्नास्ति भवन्तौ हि गती मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन कृपां कुरु कृपानिधे ? ॥७॥
दासोऽहं शेषभूतोऽहं तवैव शरणागतः ।
पराधितोऽहं दीनोऽहं पाहि मां करुणाकर ? ॥८॥

विवाहपञ्चमी श्रीरामानन्दाब्द ७०२ विक्रमाब्द २०५९
जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यपीठ
अमहदाबाद-७ फोन ६६०१००१

卐 सर्वेश्वरश्रीसीतारामाभ्यां नमः 卐

❀ श्रीहनुमते नमः ❀

卐 प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनमः 卐

महर्षि श्रीवाल्मीकिप्रणीतम्

श्रीमद्-मूलरामायणम्

ॐ

तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम् ।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुंगवम् ॥१॥

卐 सर्वेश्वरश्रीसीतारामाभ्यां नमः 卐

❀ श्रीहनुमते नमः ❀

卐 जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्याय नमः 卐

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्यप्रणीता

卐 लघुदीपिका 卐

सीतारामसमारम्भां शुकबोधायनान्विताम् ।
रामानन्दार्यमध्यस्थां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

वेद से प्रतिपाद्य यानी जाने जानेवाले सर्वावतारी श्रीरामजी ने भक्तों का रक्षण दुष्टों का संहार एवं सनातन श्रीवैष्णवधर्म का संस्थापन हेतु राजा श्रीदशरथजी के यहाँ अयोध्या में मानव शरीर को धारण किया तव वेद

ने भी प्राचेतस महर्षि श्री वाल्मीकिजी के द्वारा श्रीमद्रा मायण के रूपमें अवतार लिया अतः श्रीमद्रामायण वेद ही है इसप्रकार भगवान् श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीजी से कहा-'**वेद वेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे । वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना । तस्माद्रामायणं देवि ? वेद एव न संशयः**' वह श्रीमद्रामायण चौवीश हजार श्लोक एवं सातकाण्ड में लिखा गया है। सम्पूर्ण श्रीमद्रामायण का विषय निर्देश करनेवाला बालकाण्ड का प्रथमसर्ग जो मूल श्रीमद्रामायण के नाम से अति प्रसिद्ध है अभी केवल उसी का अतिसंक्षिप्त **लघुदीपिका** के नाम से विवरण किया जा रहा है जो श्रीनारदजी तथा श्रीवाल्मीकिजी के संवाद के रूपमें ग्रथित सौ श्लोक हैं-

सदा तपस्या में लीन श्रीवाल्मीकिजी ने सर्वदा तप एवं स्वाध्याय में संलग्न विचारक विद्वानों में श्रेष्ठ मुनिवर श्रीनारदजी से शिष्टाचारपूर्वक अतिविनय से पूछा-॥१॥

कोन्वस्मिन्सांप्रतं लोके गुणवान्कश्च वीर्यवान् ।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥२॥

श्रीवाल्मीकिजी ने श्रीनारदजी से प्रश्न किया हे श्रीनारदजी ? वर्तमान में इस संसार में गुणवाला वीर्यवाला धर्म

को जाननेवाला उपकार को माननेवाला सदा सत्य बोलने वाला तथा दृढप्रतिज्ञावाला कौन व्यक्ति है ? ॥२॥

चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः ।
विद्वान्कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः ॥३॥

सदाचारपरायण सभी प्राणिवर्गों का हित करनेवाला विद्वान् एवं समर्थ शक्ति शाली तथा एकमात्र-अद्वितीय सुन्दर और प्रियदर्शन-मनोहर पुरुष कौन है ? ॥३॥

आत्मवान्को जितक्रोधो द्युतिमान्कोऽनसूयकः ।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ॥४॥

हे मुनीश्वर ? शरण में आये जीवों का रक्षक एवं क्रोध को जीतनेवाला कान्तिवाला और किसी भी व्यक्ति की निन्दा नहीं करनेवाला कौन पुरुष है ? तथैव रणभूमि में क्रोधित हो जाने पर देवता भी डर जाते हों ऐसा कौन व्यक्ति है ? ॥४॥

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतुहलं हि मे ।
महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम् ॥५॥

हे महर्षि ? मुझे बहुत कुतूहत है कि ऐसा पुरुष कौन है यह मैं आप से सुनना चाहता हूँ क्योंकि आप ऐसे पुरुष को जानते हैं एवं उसके उपदेश करने में भी समर्थ हैं ॥५॥

श्रुत्वा चैतत्त्रिलोकज्ञो वाल्मीकेर्नारदो वचः ।
श्रूयतामिति चामन्त्र्य प्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत् ॥६॥

सर्वेश्वर श्रीरामजी के विशिष्ट तत्त्व विषय के महर्षि श्रीवाल्मीकिजी के इन जिज्ञासापूर्ण वचनों को सुनकर तीनों लोक के साथ श्रीरामतत्त्व के विशेष ज्ञाता श्रीनारदजी अतिप्रसन्नतापूर्वक आपके इच्छित प्रश्नों का उत्तर सुनें ऐसा कहकर कहने लगे-॥६॥

बहवो दुर्लभाश्चैव ये त्वया कीर्तिता गुणाः ।
मुने वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः ॥७॥

हे श्रीरामतत्त्व जिज्ञासु वाल्मीकिजी ? आपने बहुतसे जिन अतिदुर्लभ गुणों का वर्णन किया है उन गुणों से युक्त पुरुष तो सामान्यतः दुर्लभ है तथापि मैं विचार-अनुसन्धान करके वैसे व्यंक्ति के विषय में कहता हूँ आप सावधानी से सुनें ॥७॥

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः ।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान्धृतिमान्वशी ॥८॥

मुनीश्वर ? नियतः-आत्मा-साक्षात् ईश्वर स्वरूप एवं जीवात्माओं को उन उन कार्यों में संनियोजित करनेवाले अतिबलवाले विशेष कान्तिवाले परमधैर्य शाली तथा सभी इन्द्रियों को वश में रखनेवाले इक्ष्वाकु

वंश में समुत्पन्न '**राम**' इस नाम से तीनों लोकों में विख्यात एक मात्र ऐसे पुरुष हैं जिसे आपने जानना चाहा ॥८॥

बुद्धिमान्नीतिमान्वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः ।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः ॥९॥

वे सर्वेश्वर श्रीरामजी बुद्धिमान् हैं नीति को जानने वाले हैं सत्य एवं यथार्थ वक्ता हैं **सर्वदा श्रीश्रीसीताजी** से युक्त रहते हैं और अपने आश्रितजनों के शत्रुओं का नाशक हैं उनके कन्धे मांसल एवं मोटे हैं हाथ बडे बडे और लम्बे हैं ग्रीवा-गला शङ्ख के समान है तथा हनु-ठोढी पुष्ट एवं सुन्दर है ॥९॥

महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः ।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः ॥१०॥

वे परेश श्रीरामजी की छाती चौडी और धनुष बडा है गले के दोनों भाग के नीचे की हड्डी मांसल होने से ढकी हुई है तथा शत्रुओं का दमन करनेवाले हैं उनके हाथ घुटने तक लम्बे हैं मस्तक अतिसुन्दर और ललाट अर्धचन्द्राकार होने से अतिभव्य है तथा चलने की गति अतिमनोहारी है ॥१०॥

समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान् ।

पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ॥११॥

उन श्रीरामजी का अङ्ग अधिक ऊँचा नीचा बेडोल न होकर लक्षण शास्त्र के अनुसार समानरूपवाला है शरीर का रंग चिकना है एवं वे अतिप्रतापी हैं तथैव भरा हुआ विशाल छाती है खीले कमल के सदृश बडे बडे आँखे है एवं सभी ऐश्वर्यों से युक्त होने से सभी शुभलक्षणों से सम्पन्न हैं ॥११॥

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः ।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान् ॥१२॥

वे श्रीरामचन्द्रजी धर्मतत्त्व को जाननेवाले प्रतिज्ञा को पालन करनेवाले एवं सर्वदा प्रजावर्गों के हित साधना में लगे रहनेवाले तथा विशुद्ध यशवाले और तत्त्व ज्ञान से सम्पन्न-परिपूर्ण हैं बाहर के आचरणों एवं आन्तरिक आचरणों से अतिपवित्र हैं इन्द्रियों को वश में रखनेवाले एवं आश्रितजनों के सुरक्षा हेतु सर्वदा चिन्तन परायण हैं ॥१२॥

प्रजापतिसमः श्रीमान्धाता रिपुनिषूदनः ।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ॥१३॥

वे श्रीरामजी प्रजापति-ब्रह्मादि के समान प्रजा पालक एवं सर्व श्री-ऐश्वर्यों से नित्य सम्पन्न हैं तथा शत्रुओं के

नाशक हैं एवं शरणागत जीवों के संरक्षक और सनातन वैदिक श्रीवैष्णवधर्म के सुपरिरक्षक हैं ॥१३॥

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता ।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः ॥१४॥

वे श्रीरामजी अपने प्रतिज्ञापनरूप धर्म एवं सनातन श्रीवैष्णवधर्म के साथ अपने शरण में आये हुये जनों के भी रक्षक-परिपालक हैं तथा सभी वेद एवं वेदाङ्गों के यथार्थ तत्वों को जाननेवाले हैं और धनुर्वेद-धनुर्बाण विद्या में भी परमनिपुण हैं ॥१४॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान्प्रतिभानवान् ।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥१५॥

वे श्रीरामजी समस्त शास्त्रों के तात्विक अर्थों को जाननेवाले हैं एवं स्थाई स्मृति-स्मरण शक्तिवाले हैं और विशिष्ट प्रतिभा से सम्पन्न हैं तथा समस्त लोक लोकान्तरों के प्रिय हैं तथैव परोपकार परायण और परम उदार हृदय वाले हैं और वार्तालाप करने में परम चतुर हैं ॥१५॥

सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः ।
आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ॥१६॥

जिस प्रकार सभी छोटी नदियाँ समुद्र में मिल जाती हैं उसीप्रकार सर्वदा श्रीवशिष्ठजी प्रभृति सभी

सज्जन-साधुलोग वे रोक टोक श्रीरामजी से मिलते रहते हैं। वे आर्य-ईश्वरों के भी ईश्वर हैं तो भी सभी के साथ समान व्यवहार रखते हैं एवं वे सदा सभी के लिये प्रियदर्शन-नित्यदर्शनीय ही बने रहते हैं किसी के अप्रिय नहीं होते ॥१६॥

स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्दवर्धनः ।
समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव ॥१७॥

वे श्रीरामजी श्रीकौसल्या के आनन्द को बढाने वाले हैं तथा ऐश्वर्यादि सभी गुणों से युक्त हैं एवं गम्भीरता में समुद्र के समान तथा धैर्य में हिमालय पर्वत के समान हैं ॥१७॥

विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः ।
कालाग्निसदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः ॥१८॥

उन श्रीरामज़ी के वीर्य-बल के वरावरी श्रीविष्णु जी भी नहीं कर सकते हैं श्रीरामजी का दर्शन चन्द्रमा के समान सदा प्रिय लगनेवाला है वे क्रोध में कालाग्नि के समान एवं क्षमा में पृथिवी के समान हैं ॥१८॥

धनदेन समस्त्यागे सत्ये धर्म इवापरः ।
तमेवंगुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम् ॥१९॥

वे श्रीरामजी धन देने में कुरेवर के समान एवं

सत्य के पालन में दूसरे धर्मराज के समान हैं। पूर्व वर्णित सर्वोत्तम गुणों से सम्पन्न तथा सत्य पराक्रमवाले श्रीरामजी को-॥१९॥

ज्येष्ठं ज्येष्ठगुणैर्युक्तं प्रियं दशरथः सुतम्।
प्रकृतीनां हितैर्युक्तं प्रकृतिप्रियकाम्यया ॥२०॥

राजा दशरथजी अपने सवसे बडे एवं श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न प्रिय पुत्र श्रीरामजी जोकि प्रजा के हित कार्यों में ही लगे रहते थे प्रजावर्ग के कल्याण की कामना-भावना से-॥२०॥

यौवराज्येन संयोक्तुमैच्छत्प्रित्या महीपतिः।
तस्याभिषेकसम्भारान्दृष्ट्वा भार्याऽथ कैकयी ॥२१॥

प्रीतिपूर्वक राजादशरथजी ने श्रीरामजी को युवराज पद पर अभिषेक करना चाहा तव दशरथजी की भार्या-पत्नी कैकेयी ने श्रीरामजी के अभिषेक की तैयारियाँ देखकर-॥२१॥

पूर्वं दत्तवरा देवी वरमेनमयाचत।
विवासनं च रामस्य भरतस्याभिषेचनम् ॥२२॥

पहले से ही राजा दशरथ से वरदान प्राप्त की हुई कैकेयी ने राजा से श्रीरामजी का चौदह वर्ष का वनवास एवं श्रीभरतजी का राज्याभिषेक का वरदान मांगा ॥२२॥

स सत्यवचनाद्राजा धर्मपाशेन संयतः ।
विवासयामास सुतं रामं दशरथः प्रियम् ॥२३॥

उस राजा श्रीदशरथ ने दिये हुये सत्य वचन के कारण धर्मपाश-धर्मसंकट से बंधकर प्रिय पुत्र श्रीरामजी को वनवास हेतु निर्वासित किया ॥२३॥

स जगाम वनं वीरः प्रतिज्ञामनुपालयन् ।
पितुर्वचननिर्देशात्कैकेय्याः प्रियकारणात् ॥२४॥

कैकेयी का प्रिय हो इसलिये पिताजी की आज्ञा एवं उनकी प्रतिज्ञा का पालन करते हुये परमवीर श्रीरामजी वन में चले गये ॥२४॥

तं व्रजन्तं प्रियो भ्राता लक्ष्मणोऽनुजगाम ह ।
स्नेहाद्विनयसम्पन्नः सुमित्रानन्दवर्धनः ॥२५॥

श्रीरामजी को वन में जाते हुये अनुभवकर श्रीरामजी का स्नेही प्रिय भाई सुमित्राजी के आनन्द को बढानेवाले अतिविनय से युक्त श्रीलक्ष्मणजी भी श्रीरामजी में विशेष स्नेह होने के कारण उनके पीछे वन में चल दिये ॥२५॥

भ्रातरं दयितो भ्रातुः सौभ्रात्रमनुदर्शयन् ।
रामस्य दयिता भार्या नित्यं प्राणसमा हिता ॥२६॥

बडेभाई श्रीरामजी का प्रिय छोटाभाई श्रीलक्ष्मणजी श्रीरामजी के ऊपर विशेष स्नेह का परिचय दर्शाते

हुये श्रीरामजी के साथ हो गये। श्रीरामजी की प्राण के समान प्रिय भार्या प्राण के समान नित्य-सर्वदा साथ रहनेवाली एवं हित करनेवाली श्रीसीताजी भी श्रीरामजी के साथ चलीं-॥२६॥

जनकस्य कुले जाता देवमायेव निर्मिता।
सर्वलक्षणसम्पन्ना नारीणामुत्तमा वधुः ॥२७॥

जो श्रीसीताजी श्रीजनकजी के कुल में श्रीरामजी के कृपास्वरूप में उनकी सहभागिनी के रूपमें प्रकट हुई थी वह श्रीरघुनाथजी के मन को हरण करनेवाली ब्रह्माणि आदि सभी को उत्पन्न करनेवाली सर्वोत्तम एवं सभी लक्षणों से सम्पन्न थीं वे भी श्रीरामजी के पीछे चलीं-॥२७॥

सीताऽप्यनुगता रामं शशिनं रोहिणी यथा।
पौरैरनुगतो दूरं पित्रा दशरथेन च ॥२८॥

श्रीरामजी के वन गमन पर चन्द्रमा के साथ रोहिणी के समान श्रीसीताजी भी श्रीरामजी के पीछे छाया के समान चल दीं। तब श्रीरामजी के पिता दशरथजी ने सुमन्त्र के द्वारा पहुँचाने हेतु रथ भेजकर अनुसरण किया उस समय अयोध्या वासी जनों ने बहुत दूर तक श्रीराम जी का अनुगमन किये-तामसा तट तक साथ गये ॥२८॥

शृङ्गवेरपुरे सूतं गङ्गाकूले व्यसर्जयत्।

गुहमासाद्य धर्मात्मा निषादाधिपतिं प्रियम् ॥२९॥

परमधर्म प्रवर्त्तक श्रीरामजी ने श्रृङ्गवेरपुर में गङ्गा के तट पर_अपने प्रिय सखा निषादराज गुह को प्राप्त करने के वाद रथ लेकर आये सारथी श्रीसुमन्त्रजी को वापस अयोध्या रथ के साथ भेज दिये ॥२९॥

गुहेन सहितो रामो लक्ष्मणेन च सीतया ।
ते वनेन वनं गत्वा नदीस्तीर्त्वा बहूदकाः ॥३०॥

वाद में श्रीरामजी श्रीसीताजी श्रीलक्ष्मणजी एवं श्रीनिषादराज गुह के साथ अधिक जलवाली नदियों को पार करते तथा एक वन से दूसरे वन को भी पार करते हुये प्रयागराज में पहुँचे-॥३०॥

चित्रकूटमनुप्राप्य भरद्वाजस्य शासनात् ।
रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः ॥३१॥

श्रीभरद्वाज ऋषि की अनुमति से चित्रकूट पर पहुँचकर वहाँ सुन्दर पर्णशाला बनाकर श्रीरामजी श्रीसीताजी एवं श्रीलक्ष्मणजी तीनों अनेक प्रकार क्रीडा करते हुये रहने लगे-॥३१॥

देवगन्धर्वसङ्काशास्तत्र ते न्यवसन्सुखम् ।
चित्रकूटं गते रामे पुत्रशोकातुरस्तथा ॥३२॥

देवों एवं गन्धर्वों के समान अनेक प्रकार की क्रीडाएँ

करते हुये श्रीरामजी श्रीसीताजी एवं श्रीलक्ष्मणजी तीनों ही चित्रकूट में सुखपूर्वक रहने लगे । श्रीरामजी के चित्रकूट चले जाने पर पुत्रशोक से दुःखी होकर-॥३२॥

राजा दशरथः स्वर्गं जगाम विलपन्सुतम् ।
गते तु तस्मिन्भरतो वसिष्ठप्रमुखैर्द्विजैः ॥३३॥

श्रीरामजी के विषय में हा राम ? हा राम ? वार वार कहते विलाप करते हुये राजा दशरथ स्वर्ग चले गये। राजा के स्वर्ग जाने के वाद श्रीवशिष्ठ आदि मुख्य ऋषियों से राजा होने हेतु कहने पर भी श्रीभरतजी ने स्वीकारा नहीं पर-॥३३॥

नियुज्यमानो राज्याय नैच्छद्राज्यं महाबलः ।
स जगाम वनं वीरो रामपादप्रसादकः ॥३४॥

राजा होने का अधिकार बडे भाई का है ऐसा कहकर महाबलशाली श्रीराम पदारविन्दों का सेवक वीर श्रीभरतजी श्रीरामजी को मनाने के लिये वन की ओर प्रस्थान किये ॥३४॥

गत्वा तु स महात्मानं रामं सत्यपराक्रमम् ।
अयाचद्भ्रातरं राममार्यभावपुरस्कृतः ॥३५॥

चित्रकूट में पहुँचकर श्रीरामजी में परमप्रीति प्रकट करते हुये श्रीभरतजी ने सत्यपराक्रम-अमोघ वीर्य

वाले सर्वेश्वर परात्पर परब्रह्म श्रीरामजी अपने बडेभाई श्रीरामजी से याचना की कि-॥३५॥

त्वमेव राजा धर्मज्ञ इति रामं वचोऽब्रवीत् ।
रामोऽपि परमोदारः सुमुखः सुमहायशाः ॥३६॥

हे धर्मज्ञ ? आप ही अयोध्या के राजा वनें इस प्रकार श्रीरामजी से सविनय प्रार्थना की । किन्तु परम यशस्वी परम उदार अतिसुन्दर देदिप्यमान मुखवाले श्री रामजी ने भी-॥३६॥

न चैच्छत्पितुरादेशाद्राज्यं रामो महाबलः ।
पादुके चास्य राज्याय न्यासं दत्त्वा पुनःपुनः ॥३७॥

पिताजी की आज्ञा पालन को दृष्टि में रखकर महा बलशाली श्रीरामजी राज्य को स्वीकार नहीं किये पर श्रीभरतजी को राज्य प्रशासन के लिये अपनी श्रीचरण पादुका चिह्न के रूपमें प्रतिनिधि स्वरूप देकर वारवार आग्रह करके-॥३७॥

निवर्तयामास ततो भरतं भरताग्रजः ।
स काममनवाप्यैव रामपादावुपस्पृशन् ॥३८॥

श्रीरामजी ने श्रीभरतजी को अयोध्या वापस लौटा दिये यानी अयोध्या जाने की आज्ञा दी तव श्रीभरतजी श्रीरामजी को वापस ले आने की इच्छा के पूर्ण न होने

से श्रीरामजी के श्रीचरणों में सादर अभिवादन कर वापस होकर-॥३८॥

नन्दिग्रामेऽकरोद्राज्यं रामागमनकाङ्क्षया ।
गते तु भरते श्रीमान्सत्यसन्धो जितेन्द्रियः ॥३९॥

चौदह वर्ष वाद श्रीरामजी की आने की प्रतिक्षा करते हुये श्रीभरतजी नन्दि ग्राम में रहकर राज्य का प्रशासन करने लगे। श्रीभरतजी के वापस होने पर षडैश्वर्य शाली जितेन्द्रिय सत्यप्रतिज्ञ-सदा सत्य व्यवहारवाले-॥३९॥

रामस्तु पुनरालक्ष्य नागरस्य जनस्य च ।
तत्रागमनमेकाग्रो दण्डकान्प्रविवेश ह ॥४०॥

श्रीरामजी नागरिकजन एवं श्रीभरतजी का भी पुनः चित्रकूट आ जाने की संभावना से एकान्तनिवास हेतु दण्डकारण्य में प्रवेश किये ॥४०॥

प्रविश्य तु महारण्यं रामो राजीवलोचनः ।
विराधं राक्षसं हत्वा शरभङ्गं ददर्श ह ॥४१॥

कमलनयन श्रीरामजी ने महारण्य-दण्डक वन में प्रवेशकर विराध राक्षस का वध किये वाद में श्रीशर भङ्गजी का दर्शन करके-॥४१॥

सुतीक्ष्णं चाप्यगस्त्यं च अगस्त्यभ्रातरं तथा ।
अगस्त्यवचनाच्चैव जग्राहैन्द्रं शरासनम् ॥४२॥

श्रीसुतीक्ष्णजी श्रीअगस्त्यजी एवं श्रीअगस्त्यजी के भाई का भी दर्शन किये। श्रीअगस्त्यजी की आज्ञा से ऐन्द्रशरासन-धनुष को ग्रहण किये ॥४२॥

खड्गं च परमप्रीतस्तूणी चाक्षयसायकौ ।
वसतस्तस्य रामस्य वने वनचरैः सह ॥४३॥

पुनः परमप्रसन्न होकर अक्षय बाणवाले दो तूणीर एवं खड्ग को भी श्रीरामजी ने ग्रहण किये । ऋषियों तथा वनचरों के साथ वन में निवास कर रहे उन श्रीरामजी के पास-॥४३॥

ऋषयोऽभ्यागमन्सर्वे वधायासुररक्षसाम् ।
स तेषां प्रतिशुश्राव राक्षसानां तदा वने ॥४४॥

एक दिन संमिलित होकर सव ऋषिलोग असुर एवं राक्षसों के वधार्थ श्रीरामजी से प्रार्थना करने आये। उस समय में वन में स्थित श्रीरामजी ने उन राक्षसों का वध हेतु ऋषियों को वचन दिया ॥४४॥

प्रतिज्ञातश्च रामेण वधः संयति रक्षसाम् ।
ऋषीणामग्निकल्पानां दण्डकारण्यवासिनाम् ॥४५॥

एवं अग्नि के समान तेजस्वी दण्डकारण्य निवासी ऋषियों के समक्ष्य उन राक्षसों का संग्राम में वध कर देने की प्रतिज्ञा भी श्रीरामजी ने की ॥४५॥

तेन तत्रैव वसता जनस्थाननिवासिनी ।
विरूपिता शूर्पणखा राक्षसी कामरूपिणी ॥४६॥

उन श्रीरामजी ने वही पञ्चवटी में निवास करते हुये इच्छानुसार रूप धारण करनेवाली जनस्थान में निवास करनेवाली शूर्पणखा राक्षसी को श्रीलक्ष्मणजी से नाक कान कटवाकर कूरूप कर दिये ॥४६॥

ततः शूर्पणखावाक्यादुद्युक्तान्सर्वराक्षसान् ।
खरं त्रिशिरसं चैव दूषणं चैव राक्षसम् ॥४७॥

तव शूर्पणखा के द्वारा उत्तेजित होकर युद्ध के हेतु आये राक्षस खर त्रिशिरा एवं दूषण के साथ आये सभी राक्षसों को-॥४७॥

निजघन रणे रामस्तेषां चैव पदानुगान् ।
वने तस्मिन्निवसता जनस्थाननिवासिनाम् ॥४८॥

तथा उनके अनुचरों को भी संग्राम में श्रीरामजी ने मार दिये । उसी वन-पञ्चवटी के निवास काल में ही जनस्थान में निवास करनेवाले-॥४८॥

रक्षसां निहतान्यासन्सहस्राणि चतुर्दश ।
ततो ज्ञातिवधं श्रुत्वा रावणः क्रोधमूर्छितः ॥४९॥

चौदह हजार राक्षसों का श्रीरामजी ने वध किये । तव अपने ज्ञातिजनों का वध सुनकर रावण क्रोध से

मूर्च्छित हो गया यानी अतिशय क्रोधित हुआ ।।४९।।

सहायं वरयामास मारीचं नाम राक्षसम् ।
वार्यमाणः सुबहुशो मारीचेन स रावणः ।।५०।।

रावण ने मारीच नामक राक्षस से सहायता की प्रार्थना की पर मारीच ने श्रीरामजी से विरोध न करने के लिये रावण को बहुत समझाया ।।५०।।

न विरोधो बलवता क्षमो रावण तेन ते ।
अनादृत्य तु तद्वाक्यं रावणः कालचोदितः ।।५१।।

रावण ? उन परमबलशाली श्रीरामजी से विरोध करना उचित नहीं है इस प्रकार समझाने पर भी काल से प्रेरित होकर रावण से हितकारी उपदेश का अनादर कर देने के वाद भी रावण के दवाव से ।।५१।।

जगाम सहमारीचस्तस्याश्रमपदं तदा ।
तेन मायाविना दूरमपवाह्य नृपात्मजौ ।।५२।।

उस मारीच के साथ श्रीरामजी के आश्रम में गया । उस मायावी मारीच के द्वारा श्रीरामजी एवं श्रीलक्ष्मणजी को आश्रम से दूर हटा दिया-।।५२।।

जहार भार्यां रामस्य गृध्रं हत्वा जटायुषम् ।
गृध्रं च निहतं दृष्ट्वा हृतां श्रुत्वा च मैथिलीम् ।।५३।।

एवं श्रीरामजी की भार्या श्रीसीताजी का अपहरण

किया। जाते रास्ते में गृध्रराज जटायु को मरणासन्न कर आगे बडा। जटायु गृध्रराज को आहत देखकर एवं उसके मुख से श्रीमैथिलीजी का रावण द्वारा अपहरण सुनकर-॥५३॥

राघवः शोकसंतप्तो विललापाकुलेन्द्रियः।
ततस्तेनैव शोकेन गृध्रं दग्ध्वा जटायुषम् ॥५४॥

श्रीराघवजी शोक से संतप्त तथा व्याकुल इन्द्रिय होकर विलाप करने लगे। अनन्तर उसी शोक के अवस्था में ही जटायु गृध्र का सविधि दाह संस्कार कर आगे बढे ॥५४॥

मार्गमाणो वने सीतां राक्षसं संददर्श ह।
कबन्धं नाम रूपेण विकृतं घोरदर्शनम् ॥५५॥

वन में श्रीसीताजी को ढूंढते हुये आंगे बढ रहे थे तव विकृतरूपवाला तथा भयानक दिखाई देनेवाला कबन्ध नामवाले राक्षस को देखे-॥५५॥

तं निहत्य महाबाहुर्ददाह स्वर्गतश्च सः।
स चास्य कथयामास शबरीं धर्मचारिणीम् ॥५६॥

महाबाहु श्रीरामजी ने कबन्ध का वधकर उसे जला दिये श्रीरामजी के हाथों संस्कार होने से वह स्वर्ग में गया, जाते समय धर्माचरण परायण शबरी के विषय

में श्रीरामजी से कहा कि-॥५६॥

श्रमणां धर्मनिपुणामभिगच्छेति राघव ।

सोऽभ्यगच्छन्महातेजाः शबरीं शत्रुसूदनः ॥५७॥

हे राघव ? धर्म में निपुण तपस्विनी शबरी के पास आप जाइये । अनन्तर महान् तेजस्वी शत्रु को मारनेवाले श्रीरामजी शबरी के आश्रम में गये ॥५७॥

शबर्या पूजितः सम्यग्रामो दशरथात्मजः ।

पम्पातीरे हनुमता सङ्गतो वानरेण ह ॥५८॥

दशरथनन्दन श्रीरामजी की शबरी ने भक्तिभाव से प्रेम पूर्वक पूजा की अनन्तर पम्पा सरोवर के किनारे में अपने चिरसेवक वानरराज श्रीहनुमानजी से समागम हुआ ॥५८॥

हनुमद्वचनाच्चैव सुग्रीवेण समागतः ।

सुग्रीवाय च तत्सर्वं शंसद्रामो महाबलः ॥५९॥

तव श्रीहनुमानजी के निवेदन करने पर ऋष्यमुक पर्वत पर श्रीसुग्रीव से मिलाप किये, अनन्तर महापराक्रमशाली-अतिबलवान् श्रीरामजी ने श्रीसुग्रीव को अपनी सभी वनवास की कहानी सुनाई ॥५९॥

आदितस्तद्यथा वृत्तं सीतायाश्च विशेषतः ।

सुग्रीवश्चापि तत्सर्वं श्रुत्वा रामस्य वानरः ॥६०॥

वनवास प्रसङ्ग में आदि से लेकर पञ्चवटी निवा

सकाल एवं विशेषकर श्रीसीताजी के हरण वृत्तान्त को यथार्थ रूपसे श्रीरामजी की समस्त वातें सुनकर वानर राज श्रीसुग्रीव् यथार्थ तत्त्व से अवगत हुआ ॥६०॥

चकार सख्यं रामेण प्रीतश्चैवाग्निसाक्षिकम् ।
ततो वानरराजेन वैरानुकथनं प्रति ॥६१॥

श्रीरामतत्त्व जानकर प्रसन्नता के साथ अग्नि को साक्षी रखकर श्रीसुग्रीव ने श्रीरामजी से मित्रता की, अनन्तर वानरराज श्रीसुग्रीवजी ने वाली के प्रति वैरभाव के कारण का पूर्ण रूपसे कथन किया ॥६१॥

रामायावेदितं सर्वं प्रणयाद्दुःखितेन च ।
प्रतिज्ञातं च रामेण तदा वालिवधं प्रति ॥६२॥

श्रीरामजी के प्रति विशेष स्नेह के कारण श्रीसुग्रीवजी ने दुःखित होकर वैरभाव सम्पत्ति एवं अपनी स्त्री का भी हरण सभी विषय श्रीरामजी से निवेदन किया, सारी वातें सुनकर श्रीरामजी ने वालिवध करने की प्रतिज्ञा की ॥६२॥

वालिनश्च बलं तत्र कथयामास वानरः ।
सुग्रीवः शङ्कितश्चासीन्नित्यं वीर्येण राघवे ॥६३॥

नित्य वीर्य सम्पन्न श्रीराघवजी के पराक्रम के विषय में शंकित होने के कारण वानर राज श्रीसुग्रीवजी ने उस स

मय में वालि के बल का वर्णन विस्तारपूर्वक किया ॥६३॥

राघवप्रत्ययार्थं तु दुन्दुभेः कायमुत्तमम् ।
दर्शयामास सुग्रीवो महापर्वतसंनिभम् ॥६४॥

वाली बलशाली है इसे श्रीराघवजी को विश्वास कराने हेतु वाली से मारा गया महान् पर्वत के समान दुन्दुभि दैत्य का विशालकाय श्रीसुग्रीवजी ने श्रीरामजी को दिखाया ॥६४॥

उत्स्मयित्वा महाबाहुः प्रेक्ष्य चास्थि महाबलः ।
पादाङ्गुष्ठेन चिक्षेप सम्पूर्णं दशयोजनम् ॥६५॥

महाबलशाली महाबाहु श्रीरामजी ने मन्दमुस्कुरा कर उस अस्थि को देखकर अनायास ही पैर के अंगूठे से पुरे अस्थि समूह को दश योजन दूर फेंक दिये ॥६५॥

बिभेद च पुनः सालान्सप्तैकेन महेषुणा ।
गिरिं रसातलं चैव जनयन्प्रत्ययं तदा ॥६६॥

पुनः श्रीरामजी ने श्रीसुग्रीवजी को अपने बल का विश्वास दिलाते हुये उनसे वताये सात सात साल वृक्षों को एक ही साथ महाबाण से विदीर्ण कर उसी बाण से उसी काल में पर्वत एवं रसातल को भी निदीर्ण कर दिये ॥६६॥

ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः ।
किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥६७॥

श्रीरामजी के इस महान् पराक्रम को देखकर वे महा कपि श्रीसुग्रीवजी विश्वस्त एवं प्रसन्न मन होकर तव श्री रामजी के साथ ही किष्किन्धा गुहा की ओर गये ॥६७॥

ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः ।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥६८॥

सोने के समान पिङ्गल वर्णवाले कपिश्रेष्ठ श्रीसुग्रीवजी ने किष्किन्धा जाकर गर्जना की उस महान् गर्जना को सुनकर वानरराज वाली गुहा से वाहर निकल आया ॥६८॥

अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः ।
निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥६९॥

जाते समय तारा के रोकने पर उसे समझाकर चला एवं मैदान में श्रीसुग्रीवजी से भिड गया उसके थक जांने पर श्रीरामजी के साथ मैदान में उतरा तव श्रीराघ वजी ने एक ही बाण से उनके साथ लड रहे वाली को मार दिया ॥६९॥

ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे ।
सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥७०॥

श्रीसुग्रीवजी के वालीवध के लिये प्रार्थना करने पर श्रीरामजी ने वाली को युद्ध में वध करने के वाद उस राज्य में श्रीसुग्रीवजी को ही श्रीराघवजी ने अभि

षिक्त कर दिये ॥७०॥

स च सर्वान्समानीय वानरान्वानरर्षभः ।
दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥७१॥

वानरश्रेष्ठ उन श्रीसुग्रीवजी ने अपना राज्य प्राप्ति के वाद सभी वानर एवं भालू को बुलाकर श्रीजानकीजी का पता लगाने हेतु चारों दिशाओं में भेज दिये ॥७१॥

ततो गृध्रस्य वचनात्सम्पातेर्हनुमान्बली ।
शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम् ॥७२॥

अनन्तर गृध्रराज सम्पातीजी के मार्गदर्शनानुसार महाबली श्रीहनुमानजी सौ योजन विस्तारवाले क्षारसमुद्र को अनायास कूदकर पारकर गये ॥७२॥

तत्र लङ्कां समासाद्य पुरीं रावणपालिताम् ।
ददर्श सीतां ध्यायन्तीमशोकवनिकां गताम् ॥७३॥

समुद्र के उस पार में श्रीहनुमानजी रावण से पालित लङ्कापुरी को प्राप्तकर वहाँ पर अशोकवाटिका में स्थित श्रीरामजी का सतत ध्यान करती हुई श्रीसीताजी को देखा ॥७३॥

निवेदयित्वाऽभिज्ञानं प्रवृत्तिं विनिवेद्य च ।
समाश्वास्य च वैदेहीं मर्दयामास तोरणम् ॥७४॥

तव श्रीहनुमानजी ने अपना परिचय के साथ श्रीरा

मजी की मुद्रिका दी एवं श्रीरामजी तथा श्रीसुग्रीवजी की मैत्री और योजना की जानकारी देकर श्रीविदेहनन्दिनीजी को आश्वस्त करके अशोकवाटिका के द्वार को मर्दित कर दिया ॥७४॥

पञ्च सेनाग्रगान्हत्वा सप्त मन्त्रिसुतानपि ।
शूरमक्षं च निष्पिष्य ग्रहणं समुपागमत् ॥७५॥

श्रीहनुमानजी से भीडने आये पांच सेनापत्तियों को मारकर सात मन्त्री के पुत्रों को भी मार दिये अनन्तर शूर वीर अक्षयकुमार को पिस देने के वाद अपनी इच्छा के अनु सार ही मेघनाद से छोडे ब्रह्मास्त्र के द्वारा पकडे गये ॥७५॥

अस्त्रेणोन्मुक्तमात्मानं ज्ञात्वा पैतामहाद्वरात् ।
मर्षयन्राक्षसान्वीरो यन्त्रिणस्तान्यदृच्छया ॥७६॥

ब्रह्माजी के वरदान से ब्रह्मपाश से अपने को मुक्त हुआ जानने के वाद भी परमवीर श्रीहनुमानजी ने इच्छापूर्वक उन बांधनेवाले राक्षसों का अपराध सहनकर लिया ॥७६॥

ततो दग्ध्वा पुरीं लङ्कामृते सीतां च मैथिलीम् ।
रामाय प्रियमाख्यातुं पुनरायान्महाकपिः ॥७७॥

वाद में मिथिला राजकुमारी श्रीसीताजी से आश्रित स्थान एवं श्रीविभीषणजी का आवास को छोडकर सारी लङ्कापुरी को जलाकर महाकपि श्रीहनुमानजी श्रीरामजी को प्रिय सन्देश देने हेतु लङ्का से वापस आये ॥७७॥

सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणम् ।

न्यवेदयदमेयात्मा दृष्टा सीतेति तत्त्वतः ॥७८॥

अपरिमित धैर्य एवं बुद्धिवाले श्रीहनुमानजी ने प्रवर्षणगिरि पर स्थित परम धैर्यशाली सर्वेश्वर श्रीरामजी के पास जाकर उनकी सादर प्रदक्षिणा एवं दण्डवत प्रणाम कर 'मैंने श्रीसीताजी को देख लिया है' इसप्रकार सम्पूर्ण वृत्तान्त का निवेदन किया ॥७८॥

ततः सुग्रीवसहितो गत्वा तीरं महोदधेः ।

समुद्रं क्षोभयामास शरैरादित्यसन्निभैः ॥७९॥

श्रीहनुमानजी से श्रीसीताजी का पूर्णवृत्त सुनने के वाद श्रीसुग्रीवजी एवं वानरों के साथ महोदधि के तटपर पहुँचने पर लङ्का जाने के लिये मार्ग प्रशस्त न होने पर सर्वेश्वर श्रीरामजी ने सूर्य के समान अतितेजस्वी बाणों से समुद्र को आकुल व्याकुल कर दिये ॥७९॥

दर्शयामास चात्मानं समुद्रः सरितां पतिः ।

समुद्रवचनाच्चैव नलं सेतुमकारयत् ॥८०॥

सर्वेश्वर श्रीरामजी के अति अद्भुत पराक्रम से भय भीत नदीपति समुद्र मनुष्य के रूपमें प्रकट होकर श्रीरामजी की वन्दना करके अपने अपराध के क्षमा हेतु प्रार्थना की एवं विश्वकर्मा पुत्र नलजी से सेतु बांधकर पार जाने की सानुनय प्रार्थना की समुद्र के प्रार्थना के अनुसार परमेश्वर श्रीरामजी ने सेनापति श्रीनलजी से सेतु का निर्माण कराये ॥८०॥

तेन गत्वा पुरीं लङ्कां हत्वा रावणमाहवे ।
रामः सीतामनुप्राप्य परां व्रीडामुपागमत् ।।८१।।

अपने से निर्माण कराये पुल से लङ्का पहुंचकर संग्राम में रावण का वध करने के वाद लक्ष्मी आदि से भी अति उत्कृष्ट श्रीसीताजी को प्राप्त कर लेने के वाद श्रीरामजी ने थोड़ासा लज्जा का अनुभव किया कि इन्द्रादि देवों की सहायता करनेवाले रघुवंशी ने वानरों से सहायता ली ।।८१।।

तामुवाच ततो रामः परुषं जनसंसदि ।
अमृष्यमाणा सा सीता विवेश ज्वलनं सती ।।८२।।

अनन्तर लोकमर्यादा सुरक्षा के लिये वन्दर भालू लङ्का वासी जनसमूह में श्रीरामजी ने श्रीसीताजी को मार्मिक वचन कहा श्रीरामजी की मार्मिक वात को सहन न करती हुई परम सती श्रीसीताजी ने अपना वास्तविक दिव्य स्वरूप प्रकट करने हेतु अग्नि में प्रवेश किया ।।८२।।

ततोऽग्निवचनात्सीतां ज्ञात्वा विगतकल्मषाम् ।
कर्मणा तेन महता त्रैलोक्यं सचराचरम् ।।८३।।

श्रीसीताजी के अग्निप्रवेश करने के वाद अग्नि देव के सत्यापन करने पर श्रीसीताजी को कलङ्क रहित अनुभव कर लोगों को भी बोध कराकर श्रीरामजी ने श्रीसीताजी को अङ्गीकार किये इस महान् श्रीरामजी के कार्य से तीनों लोक एवं चराचर जगत ने अतिआनन्द का अनुभव किया-।।८३।।

सदेवर्षिगणं तुष्टं राघवस्य महात्मनः ।

बभौ रामः सम्प्रहृष्टः पूजितः सर्वदैवतैः ॥८४॥

लोकोत्तर चमत्कारी श्रीरघुनाथजी के इस अद्भूत कार्य से सभी देव एवं ऋषिगणों ने प्रसन्नता का अनुभव किये तथा सभी देववर्गों से पूजित होने पर सर्वेश्वर श्रीरामजी परमप्रसन्नता को प्राप्तकर सुशोभित हुये ॥८४॥

अभिषिच्य च लङ्कायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम् ।
कृतकृत्यस्तदा रामो विज्वरः प्रमुमोद ह ॥८५॥

पहले की गई प्रतिज्ञा के अनुसार राक्षसराज श्रीविभीषणजी को लङ्का में अभिषिक्त करने के वाद कृतकृत्य एवं सज्जनों के सन्तापों को दूर कर देने के कारण सर्वेश्वर श्रीरामजी परमप्रसन्न हुये श्रीरामजी के सम्पूर्ण कृत्यों को देखकर अन्य लोग भी प्रमुदित हुये ॥८५॥

देवताभ्यो वरं प्राप्य समुत्थाप्य च वानरान् ।
अयोध्यां प्रस्थितो रामः पुष्पकेण सुहृद्वृतः ॥८६॥

वाद में इन्द्रादि देवताओं के द्वारा वरदान के रूपमें नीन्द से जगे हुये के समान सभी वानरों भालुओं को उत्थापन कर श्रीसुग्रीव आदि सभी सुहृदों के साथ पुष्पकविमान पर आरूढ होकर अयोध्याजी के प्रति श्रीरामजी प्रस्थान कर गये ॥८६॥

भरद्वाजाश्रमं गत्वा रामः सत्यपराक्रमः ।
भरतस्यान्तिके रामो हनुमन्तं व्यसर्जयत् ॥८७॥

सत्यपराक्रमवाले सभी को परम आराम प्रदान

करनेवाले श्रीरामजी ने महर्षि भरद्वाजजी के आश्रम पर पहुंचकर अपने आने की सूचना देने के लिये श्रीहनुमानजी को श्रीभरतजी के पास भेज दिये ॥८७॥

पुनराख्यायिकां जल्पन्सुग्रीवसहितस्तदा ।
पुष्पकं तत्समारुह्य नन्दिग्रामं ययौ तदा ॥८८॥

तव श्रीसुग्रीवादियों के साथ उसी प्रसिद्ध पुष्पक विमान पर समारूढ होकर श्रीभरतजी एवं अयोध्या सम्बन्धी कथाओं को कहते हुये श्रीरामजी उसी दिन नन्दिग्राम पहुँच गये ॥८८॥

नन्दिग्रामे जटां हित्वा भ्रातृभिः सहितोऽनघः ।
रामः सीतामनुप्राप्य राज्यं पुनरवाप्तवान् ॥८९॥

देवसमूह के दुःख को दूरकर सभी प्राणिवर्गों का हित करनेवाले भाई श्रीभरतजी आदि से प्रार्थना करने पर श्रीरामजी ने नन्दिग्राम में भाइयों के साथ जटा का शोधन करने के वाद वनवासपूर्णता की प्रसन्नता में श्रीरामजी ने श्रीसीताजी का संश्लेषण किया यानी श्रीसीताजी से मिलकर भाइयों से एवं सभी पुरवासियों से भी मिले अनन्तर राज्य को प्राप्त किये अर्थात् सभी जनों के विशेष आग्रह से राजतिलक स्वीकारे ॥८९॥

प्रहृष्टमुदितो लोकस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः ।
निरामयो ह्यरोगश्च दुर्भिक्षभयवर्जितः ॥९०॥

अव श्रीरामजी के राज्यकाल में प्रजालोग या सभी

लोकप्रसन्न एवं मुदित थे सन्तुष्ट पुष्ट परमधार्मिक तथा रोग और व्याधि से रहित एवं दुर्भिक्ष-दुष्काल आदि के भय से रहित होकर रहने लगे ॥९०॥

न पुत्रमरणं केचिद्द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित् ।
नार्यश्चाविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः ॥९१॥

श्रीरामजी के राज्य में कहीं भी कोई भी पुत्र सन्तती का मरण नहीं देखेंगे एवं नारियाँ भी विधवा नहीं होंगी और स्त्रियाँ सदा पतिव्रता होंगी ॥९१॥

न चाग्निजं भयं किञ्चिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः ।
न वातजं भयं किञ्चिन्नापि ज्वरकृतं तथा ॥९२॥

श्रीरामजी के राज्य में किसी को थोडा भी अग्नि से भय नहीं होगा एवं प्राणी पानी में नहीं डूवेंगे यानी किसी की अकाल मृत्यु नहीं होगी तथा वात रोग और ज्वर सम्बन्धी किसी भी प्रकार की व्याधियाँ कुछ भी नहीं होंगी ॥९२॥

न चापि क्षुद्भयं तत्र न तस्करभयं तथा ।
नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि च ॥९३॥

श्रीरामजी के राज्य में समस्त नियन्त्रण श्रीरामजी के ही हाथों में होने के कारण सुशासन था अतः किसी को क्षुत्-भूखे रहने का डर नहीं था तथा चोरों का भय भी नहीं रहा एवं छोटे बडे सभी नगर और सभी राष्ट्र धन धान्यों से समृद्ध होंगे ॥९३॥

नित्यं प्रमुदिताः सर्वे यथा कृतयुगे तथा ।

अश्वमेधशतैरिष्ट्वा तथा बहुसुवर्णकैः ॥९४॥

श्रीरामजी के राज्य में सभी लोग सत्ययुग के समान सर्वदा प्रसन्न रहेंगे। बहुत सुवर्ण दान से सम्पन्न होनेवाले यज्ञ तथा सैकडों अश्वमेधयज्ञ का विधिपूर्वक सम्पादन कर-॥९४॥

गवां कोट्ययुतं दत्त्वा विद्वद्भ्यो विधिपूर्वकम्।
असङ्ख्येयं धनं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो महायशाः ॥९५॥

महायशशाली श्रीरामजी विधिपूर्वक विद्वानों को दश हजार करोड गायों का आदर के साथ गोदान प्रदान कर अन्य ब्राह्मणों को भी असंख्य धन प्रदान करेंगे ॥९५॥

राजवंशाञ्छतगुणान्स्थापयिष्यति राघवः।
चातुर्वर्ण्यं च लोकेऽस्मिन्स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति ॥९६॥

श्रीराघवजी पूर्वापेक्षया समृद्धियुक्त सौ गुने अधिक राजवंशों का स्थापन करेंगे तथा इस संसार में चातुर्वण्य-ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एवं शूद्र को शास्त्र विहित उन उन के कर्मों या धर्मों में नियत रूपसे नियुक्त करेंगे ॥९६॥

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।
रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्यति ॥९७॥

मर्यादायुक्त सभी व्यवस्था कर दश हजार वर्ष के तीन गुना यानी तीस हजार वर्ष एक हजार वर्ष के तीन गुना यानी तीन हजार वर्ष यों कुल तैंतीस हजार वर्ष तक श्रीरामराज्य का प्रशासन कर मर्यादापुरुषोत्तम सर्वेश्वर श्री रामजी सपरिकर एवं प्रजाजनों के साथ स्वपरधाम दिव्यलोक

श्रीसाकेत में सदेह पधारेंगे ॥९७॥

इदं पवित्रं पापघ्नं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम् ।
यः पठेद्रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥९८॥

चारों वेदों से सम्मत पुण्य को प्रदान करनेवाला सभी पापों का नाशक परमपवित्र इस श्रीरामचरित को जो नियमित श्रद्धा से पाठ करेगा वह सभी पापों से मुक्त हो जायगा ॥९८॥

एतदाख्यानमायुष्यं पठन्रामायणं नरः ।
सपुत्रपौत्रः सगणः प्रेत्य स्वर्गे महीयते ॥९९॥

इस आयुष्य को बढानेवाली श्रीमद्रामायण की दिव्य कथा को जो मनुष्य स्वयं पढकर दूसरों को पढायेगा एवं श्रीमद्रामायण की कथा सुनायेगा वह मृत्यु के वाद पुत्र पौत्र एवं परिजनवर्गों के साथ दिव्यधाम श्री साकेत में सम्मानित होकर सदा निवास करेगा ॥९९॥

पठन्द्विजो वागृषभत्वमीयात्स्यात्क्षत्रियो भूमिपतित्वमीयात् ।
वणिग्जनः पण्यफलत्वमीयाज्जनश्च शूद्रोऽपि महत्त्वमीयात् ॥

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदिकाव्ये बालकाण्डे प्रथमः सर्गः ॥१॥

श्रीमद्रामायण के पाठ-श्रवण का श्रीराम सायुज्यमुक्ति फल है उसका लौकिक फल भी होता है-इसे पढनेवाला ब्राह्मण वाणी की श्रेष्ठता-वाणी की सिद्धि प्राप्त करेगा क्षत्रिय हो तो भूमि का पति-राज्य को प्राप्त करेगा तथा वैश्य हो तो व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त करेगा एवं शूद्र हो तो सभी जनों में आदर प्राप्त करेगा ॥१००॥
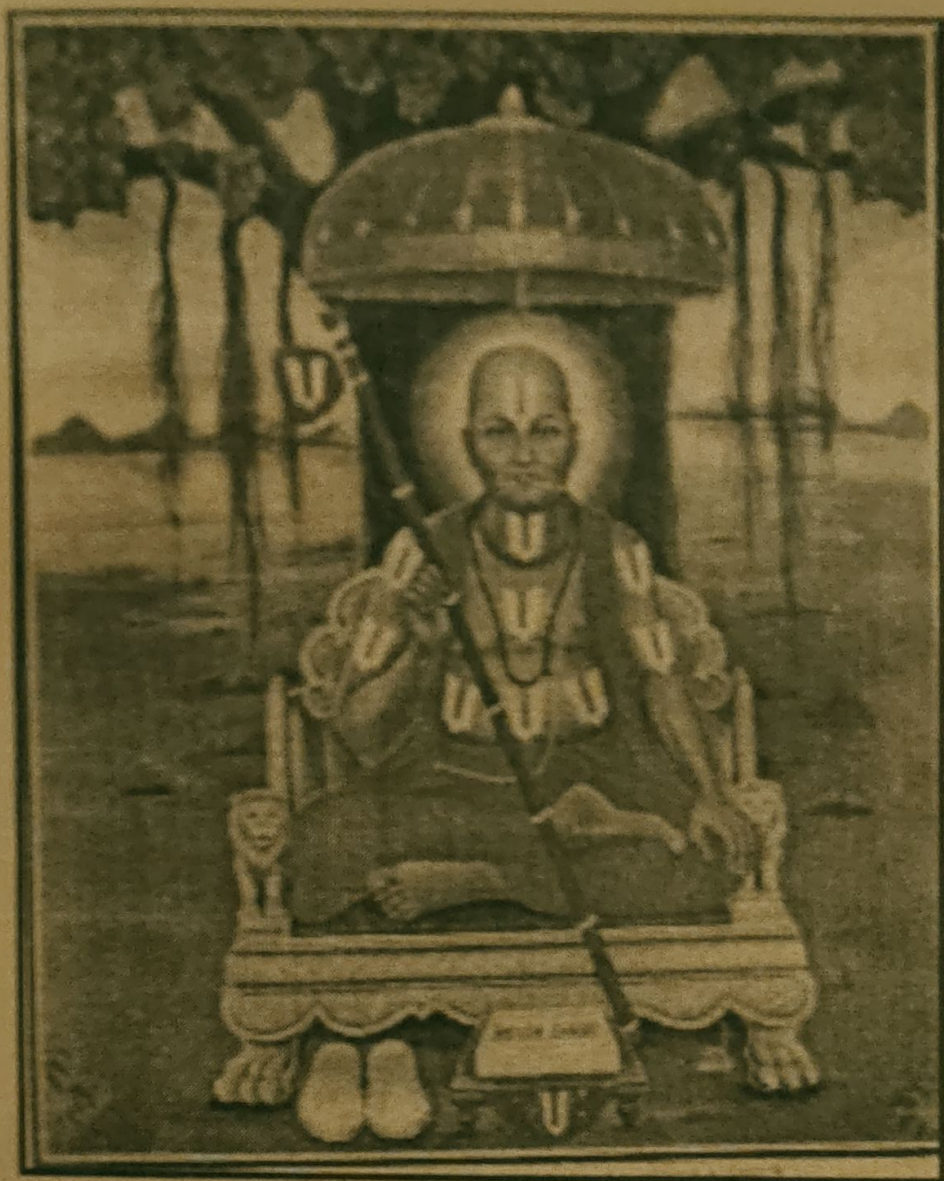
१३५६-१५३२

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यजी

की

७०२ वीं जयन्ती स्मृति

वर्तमान-श्रीरामानन्दसम्प्रदायाचार्य

आनन्दभाष्यसिहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी
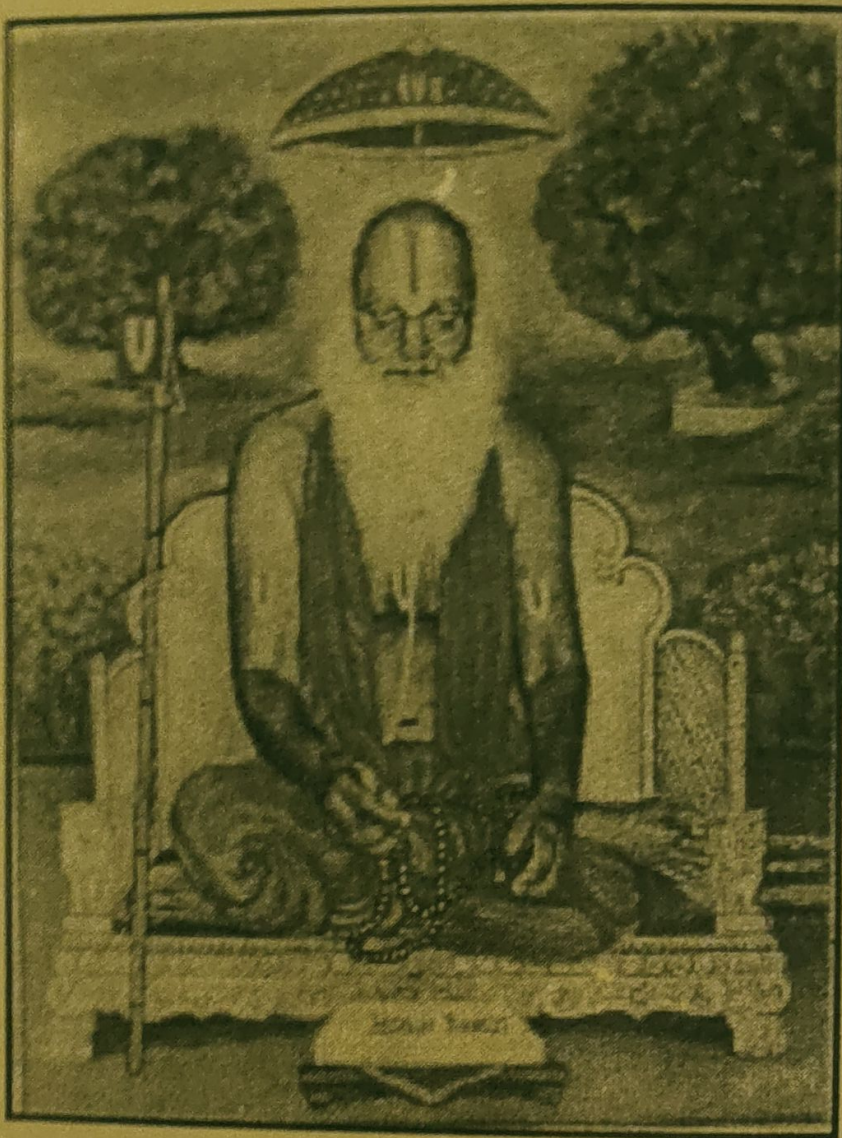
जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यपीठ

पो. पालडी, सरखेज रोड

अहमदाबाद-७ फोन ६६०१००१